OM - 14 - 2021 FINAL_Page 1 and 2 28/09/2021 5:11 PM Page 9

क्या पूजा करने से मिल जाती हैं शक्तियाँ...!!!

मूल्यों से अभिभूत मनुष्य को सभी सम्मान देते हैं। लेकिन जो व्यक्ति गुणों से सम्पन्न है उसको लोग अति विशिष्ट मानते हैं। वहीं कोई व्यक्ति शक्तियों से सम्पन्न है तो लोग उसकी पूजा करते हैं। अब स्थूल रूप से शक्ति को समझें तो कोई राजनीतिक रूप से, कोई आर्थिक रूप से, कोई सामाजिक रूप से कहीं अपनी बहुत ऊँची पहुंच रखता है तो उसको लोग अति विशिष्ट और शक्तिशाली मानते हैं, उससे जाकर मदद मांगते हैं जहाँ-जहाँ उन्हें समस्या आती है। ये लौकिक में भी कितना कारगर है आपको पता होगा। लेकिन हर कार्य बाहुबल से संभव नहीं है। कई बार जब हम किसी ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जहाँ पैसा भी है, राजनीतिक पावर भी है, सामाजिक पावर भी है तो भी हम असहाय महसूस करते हैं। समझ का स्तर कहता है, वहां सिर्फ एक मानसिक बल हमें सहारा दे सकता है। कहा जाता है, जब कोई काम नहीं आता तब दुआ काम आती है, हमारे कर्म काम आते हैं, हमारे पुण्य का खाता काम आता है।

इसलिए हमने गुण ज़रूर धारण किये लेकिन मानसिक रूप से सशक्त नहीं हुए, शक्तिशाली नहीं हुए, तो हम हर पल-हर क्षण परेशान होते रहेंगे। मानसिक बल, मानसिक शक्ति कम क्यों लगती है, क्योंकि हम स्वार्थ वश कार्य करते हैं। जब भी आप अपने बच्चे के लिए, अपने घर के लिए काम करते हैं, तो आप देखो कितना ज़्यादा थके हुए महसूस करते हैं। वहीं आप जब दूसरों के लिए कार्य करते हैं, निःस्वार्थ भाव से करते हैं तो आपकी मानसिक थकावट बहुत कम होती है। तो जिस कार्य में ट्रस्टी का भाव, निमित्त का भाव होगा, उसमें हम बहुत शक्तिशाली महसूस करेंगे। लेकिन जिसमें लेने का भाव होगा, नाम-मान की इच्छा होगी, उसमें हम हमेशा मानसिक धरातल पर अपने आप को कमज़ोर पायेंगे।

इसीलिए आज लोग सोशल वर्क करके भी टेंशन में रहते हैं। इसीलिए पूजा-पाठ का भी मानसिक स्थिति में विक्षिप्तता आने पर ही लोग सहारा लेते हैं। डायलॉग में भी लोग कहते हैं कि हे माँ! शक्ति दे। कोई नहीं कहता, हे माँ! गुण दे। तो शक्ति सिर्फ निःस्वार्थ भाव से ही आती है। शक्ति आने का आधार विकारों से अपने आपको मुक्त रखना है। इसीलिए शायद जब नवरात्रों का समय होता है या कोई ऐसा कार्य होता है तो सब इन बातों से परहेज़ रखते हैं। वो तो एक मोटा रूप हो गया विकार का, लेकिन विकार कोई भी हो, चाहे वो मोह का है, चाहे लोभ का है, चाहे अहंकार का है, सब से हमारी शक्तियां क्षीण होती हैं। इसलिए दुर्गा जी को पवित्र दिखाया जाता है, कुंवारी दिखाया जाता है। राज़ क्या है इसमें कि जो पवित्र है मन से, तन से, विचार से, व्यवहार से, उसके आगे कोई भी बाधा, समस्या टिक नहीं सकती। तो ये पूजा करने से, पाठ करने से, मंत्र उच्चारण करने से शक्ति नहीं आती। शक्ति सिर्फ और सिर्फ आती है विकारों से अपने आप को छुड़ाकर पवित्र बनने से। तो जब तक मन पूरी तरह से इन विकारिक भावनाओं से मुक्त नहीं होगा, तब तक हम शक्ति महसूस कर ही नहीं सकते।

इसलिए लोग इन दिनों में पवित्र रहते हैं, ये एक छोटा-सा उदाहरण है बस। लेकिन आज चाहे शारीरिक या मानसिक बीमारी है, दोनों को झेलने की शक्ति हमारे अंदर नहीं है, सिर्फ एक कारण, पवित्रता नहीं है, परमात्मा के साथ हम नहीं हैं। पूजा भी कर रहे हैं तो अपने घर में किसी की उन्नति के लिए, कोई पास हो गया, किसी की नौकरी लग गई, इसीलिए हम ये सब कर रहे हैं, इसलिए नहीं कि हमें शक्ति मिले। इसलिए शक्ति को प्राप्त करने के लिए पवित्र बुद्धि, पवित्र दृष्टि, पवित्र सोच, पवित्र वायब्रेशन बनाना ही दुर्गा जी जैसा बनना है। इसमें किसी के साथ जुड़ाव हमें शक्तिहीन कर देगा। इसलिए आपने देखा भी होगा कि दुर्गा जी, काली जी या कोई भी देवी का हाथ उठाकर सिर्फ शक्ति देना और गायब हो जाना, ना कि फंस जाना।

तो हम सबके साथ सिम्पैथी और इम्पैथी जताकर उन्हें शक्तिहीन बना रहे हैं न कि शक्तिशाली। सभी के अपने कर्म हैं, सभी की अपनी सोच है, सभी की अपनी पवित्रता है, उसी के आधार से सभी शक्तिहीन और शक्तिशाली महसूस कर रहे हैं। इसलिए सबको समझाकर कि आपको ये करना पड़ेगा शक्तिशाली बनने के लिए, और न्यारे हो जाओ। इसलिए शक्ति की पूजा की जाती है ताकि हमें याद आये कि आत्मा शक्तिशाली थी तो कोई दुःख-दर्द नहीं था, अब कमज़ोर है इसलिए शक्ति की आवश्यकता है।

सभी भक्त कुछ न कुछ मन्नतें मांगते हुए शक्तियों की पूजा-आराधना करते हैं, व्रत रखते हैं, उपवास करते हैं। आखिर शक्ति ही क्यों चाहिए? गुण क्यों नहीं चाहिए? आराध्य के पास बैठकर कहते हैं कि हे माँ शक्ति दे, वरदान दे, ताकि हम सभी को सुख पहुंचा सकें अर्थात् सुख पहुंचाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। और शक्ति कैसे आयेगी, इस बात को समझना ही आज का विषय है।

! यह जीवन है !

बिना लक्ष्य के जीवन बिना पता लिखे लिफाफे जैसा है, जो कहीं नहीं पहुंच सकता। इसलिए महान लक्ष्य बनायें और महान कर्म करें, तभी हम महान बन सकते हैं। क्योंकि कोई भी अच्छा परिवर्तन क्रोध या ताकत से नहीं आता। बोए पेड़ बबूल के और उम्मीद करें आम मिलने की, ऐसा संभव नहीं है।

इसलिए चाहे स्वयं को अच्छा बनना हो या किसी और को, प्रेम और स्नेह ही एकमात्र विधि है।

बैकुंठपुर-छ.ग.। विधायक अम्बिका सिंघदेव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन तथा ब्र.कु. ममता बहन।

पुखरायाँ-उ.प्र.। विधायक विनोद कटियार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता दीदी।

फरीदाबाद से.21 डी.-हरियाणा। पुलिस कमिश्नर एवं अन्य पुलिस स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. रंजना बहन तथा अन्य।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। बी.एस.एफ. के असिस्टेंट कमाण्डेंट नरेश कुमार एवं जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नीतू बहन, ब्र.कु. नारायण भाई व ब्र.कु. सागर भाई।

नवसारी-गुज.। रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पी.एस.आई. सागर साहेब, पुलिस स्टाफ तथा ब्र.कु. मुकेश बहन।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। फायर सर्विस कंट्रोल रूम के फायर ऑफिसर मनोज भाई सितापरा व स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. वन्दना बहन।

आवश्यक सूचना

ग्लोबल अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर,मा.आबू में निम्नलिखित पदों पर सेवा(जॉब) हेतु आवश्यकता है

1. जनरल एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन - MS/DNB(Gen.Sur)
2. मेडिकल ऑफिसर, ब्लड बैंक - MBBS with one year experience in Blood Bank
3. नर्सिंग ट्यूटर - BSc(Nursing) with teaching experience
4. स्टाफ नर्स - BSc(Nursing)
5. लैब टेक्नीशियन - D.M.L.T.

उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें - 9414374589
ई-मेल - ghrchrd@ymail.com